1

Dr. Honey Sinha
Assistant professor
Dept. of Commerce
Sub: (B.O) Business Organisation
B.Com part - 1st
SNSRKS College Saharsa

Introduction: Definition and Kinds of shares.
(अंश के परिभाषा एवं भेद)

अंश का अर्थ एवं परिभाषा :- कम्पनी अधिनियम की धारा 2(46) के अनुसार, अंश का आशय कम्पनी की अंशपूँजी के एक भाग से है और उसमें स्कन्ध भी शामिल है जब तक कि अंश और स्कन्ध मे स्पष्टतया और गार्भित रूप से अन्तर न किया गया हो। "लेकिन अधिनियम द्वारा दी गई यह परिभाषा स्पष्ट नहीं है।

न्यायधीश लिण्डले के अनुसार, "पूँजी का वह आनुपातिक भाग जिसका प्रत्येक सदस्य अधिकारी होता है, उसका अंश कहलाता है।"

स्पष्ट अर्थो में कम्पनी की समस्त पूँजी को जब छोटे-छोटे हिस्सो मे विभाजित कर दिया जाता है तो एक छोटे हिस्से को अंश कहा जाता है।

विशेषताएं —

1. कम्पनी की पूँजी संरचना के एक भाग होते हैं।
2. लाभांश का प्रथम अधिकार होता है।
3. पूँजी की वापसी के सम्बन्ध मे प्रथम अधिकार होता है।
4. लाभांश की दर निश्चित होती है।

(5) किसी प्रकार का जोखिम नहीं होता है।
(6) कुछ मामलों में इन्हें मताधिकार भी प्राप्त होता है।

(अंशों के भेद)
(KINDS of SHARES)

कम्पनी अधिनियम के अनुसार अब केवल दो प्रकार के अंश ही निर्गमित किये जा सकते हैं —

(1) पूर्वाधिकारी अंश (Preference Share)
(2) समता अंश अथवा (साधारण अंश) (Equity Shares)

(I) पूर्वाधिकारी अंशों का आशय उन अंशों से है जिन्हें लाभांश वितरण और पूँजी वापसी के सम्बन्ध में प्राथमिकता प्राप्त होती है। ऋण पूँजी पर ब्याज चुकाने के बाद कम्पनी की आय का जो भाग शेष बचता है उसमें से पूर्वाधिकारी अंशों को निश्चित दर से लाभांश प्राप्त करने का प्रथम अधिकार ही लाभांश सम्बन्धी पूर्वाधिकार कहा जाता है। कम्पनी के समापन की दशा में सर्वप्रथम पूर्वाधिकारी अंशों को पूँजी प्राप्त करने का अन्य अंशों की अपेक्षा अधिकार प्राप्त होता है। एक कम्पनी में विभिन्न प्रकार के पूर्वाधिकारी अंश हो सकते हैं।

(II) समता अथवा साधारण अंश (Equity Shares)
जो अंश पूर्वाधिकारी अंश नहीं हैं वे समता अंश कहे जाते हैं, अर्थात ऐसे अंश जिन्हें लाभांश प्राप्ति

एवं पूँजी की वापसी मे पूर्वाधिकारी अंशों के पश्चात अधिकार मिलता हो, समता अंश कहे जाते है। समता अंश कहे जाते हैं। समता अंशों के धारक कम्पनी के मूल स्वामी होते हैं। इन्हे मतदान का अधिकार होता है। इन अंशो के धारक कम्पनी के अवशिष्ट के दावेदार होते हैं। प्रो॰ रेमण्ड के अनुसार, "यह वह पूँजी है जो उपक्रम की अन्तिम जोखिम उठाती है, जो उपक्रम की अवशिष्ट आय तथा संसाधनों को बाँटती है और व्यवसाय की नियंत्रण पूँजी के इसी रूप मे निहित होता है।"

The end

Dr. Honey Sinha.
Assistant professor
Dept. of Commerce
SNSRKS college
Saharsa

— x —